संपादकीय

उम्मीदों का टीका

सोमवार को पंद्रह से अठारह साल के किशोर-किशोरियों में वैक्सीन लगाये जाने को लेकर जो उत्साह नजर आया, उससे पता चलता है कि किशोर व अभिभावक संक्रमण से बचाव को लेकर खासे फिक्रमंद थे। नये वेरिएंट के तेज होते संक्रमण में किशोरों का टीकाकरण और अन्य पाबंदियां निस्संदेह दोहरी प्रतिरक्षा प्रदान करेंगी। काफी लंबे विमर्श के बाद किशोरों का टीकाकरण आरंभ हुआ। इससे जहां कोरोना से लड़ाई को मजबूती मिलेगी, वहीं शिक्षण संस्थानों में स्थिति शीघ्र सामान्य बनाने में भी मदद मिलेगी। गत 25 दिसंबर को प्रधानमंत्री ने तीन जनवरी से किशोरों के टीकाकरण व 10 जनवरी से स्वास्थ्य कर्मियों, अग्रिम मोर्चे के कार्यकर्ताओं तथा साठ साल से अधिक उम्र के लोगों को तीसरी सुरक्षा डोज देने की घोषणा की थी। ओमीक्रोन की तेज संक्रमण दर के बाद यह जरूरी हो गया था। हालांकि, देशभर में अब तक 146 करोड़ से अधिक वैक्सीन की डोज लगायी जा चुकी हैं, जिसमें अस्सी करोड़ से ज्यादा को पहली व साठ करोड़ से अधिक को दूसरी डोज लगायी जा चुकी है। लेकिन यह हमारे लिये चिंता की बात होनी चाहिए कि करीब चौंसठ फीसदी वयस्क आबादी को ही दोनों डोज लग पायी हैं। फिक्र यह भी कि केवल पचपन फीसदी युवा आबादी ने दोनों टीके लगवाए हैं। बहरहाल, हालिया चरण में करीब आठ से नौ करोड़ किशोर-किशोरियों को दोनों डोज लगायी जाएंगी। उन्हें भारत बायोटेक का कोवैक्सीन टीका दिया जायेगा। इस आयुवर्ग के किशोर कोविन वेबसाइट पर नामांकन दर्ज करा सकते हैं। पहले से बने परिवार के सदस्य के अकाउंट के जरिये भी टीकाकरण के लिये रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है। इसके साथ ही टीकाकरण केंद्रों में भी किशोरवय पंजीकरण करवा सकते हैं। निस्संदेह, वयस्क आबादी के करीब इस आयुवर्ग को टीका दिया जाना सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आबादी संक्रमण की दृष्टि से संवेदनशील है। वहीं दूसरी डोज छह हफ्ते के अंतराल में दी जानी है।

उल्लेखनीय है कि कोवैक्सीन निर्माता कंपनी भारत बायोटेक के दो वर्ष से 18 वर्ष तक के बच्चों पर किये गये ट्रायलों के नतीजे उत्साहवर्धक रहे थे जो आयु के हिसाब से तीन वर्गों में किये गये थे, जिसमें इंजेक्शन लगने से होने वाले दर्द के अलावा कोई गंभीर नकारात्मक प्रभाव देखने में नहीं आया। कंपनी का दावा है कि वैक्सीन को ऐसे बनाया गया है कि यह वयस्कों व बच्चों में बराबर प्रभावी है। यूं तो माना जाता है कि बच्चों की इम्यूनिटी आमतौर पर बेहतर होती है, लेकिन वे संक्रमण के वाहक हो सकते हैं। लेकिन इसके बावजूद ऐसे अभिभावकों की कमी नहीं है जो बच्चों के टीकाकरण को लेकर संकोच कर रहे हैं। यह स्वाभाविक है, विगत में भी देश में बच्चों के टीकाकरण को लेकर ऐसी ऊहापोह की स्थिति देखी गई थी। बहरहाल, यह वैक्सीन उन किशोरों के लिये बेहद उपयोगी होगी, जो किसी प्रकार के गंभीर रोगों के शिकार हैं।

थिएटर में दिखेंगी सिर्फ बिग बजट वाली बड़ी फिल्में

अजय ब्रह्मात्मज

साल 2021 की आखिरी हिंदी फिल्म शाहिद कपूर अभिनीत और गौतम चिन्नानुरी निर्देशित 'जर्सी' 31 दिसंबर 2021 को रिलीज नहीं हो पाई। ओमिक्रॉन के खौफ के कारण दिल्ली और अन्य राज्यों में सिनेमाघरों पर लगी पाबंदियों को देखते हुए रिलीज टाल दी गई। फिर भी 2021 में रिलीज हुई फिल्मों की संख्या 100 के पार हो गई। यानी संख्या के हिसाब से फिल्मों में भारी गिरावट नहीं आई है। हालांकि अधिकांश फिल्में ओटीटी पर ही रिलीज हो पाईं। महामारी के प्रकोप के चलते पूरे देश में सिनेमाघर ज्यादातर बंद ही रहे। अक्टूबर के मध्य में सभी राज्यों में थिएटर खोलने की घोषणा के बाद सुगबुगाहट हुई, लेकिन 'सूर्यवंशी' की रिलीज के पहले तक दर्शक थिएटर जाने में हिचकते रहे। रोहित शेट्टी की फिल्म 'सूर्यवंशी' ने दर्शकों को सिनेमाघर पहुंचने के लिए प्रेरित किया। ज्यादातर राज्यों में 50त्न की क्षमता से ही थिएटर खोलने की अनुमति के बावजूद इस फिल्म ने महीने भर के अंदर 193 करोड़ से अधिक का कारोबार कर लिया था। इससे यह बात फिर स्थापित हुई कि अगर लोकप्रिय स्टार अच्छी पैकेजिंग के साथ थिएटर में फिल्में लेकर आएं तो उन्हें दर्शक मिलेंगे। देखना यह है कि 7 जनवरी, 2022 को रिलीज हो रही राजामौली की 'आरआरआर' देखने कितने दर्शक आते हैं।

हिंदी फिल्मों से निराशा

इस बीच बॉक्स ऑफिस पर दिखी उम्मीद की किरणों को ओमिक्रॉन के डर के बादलों ने एक बार फिर ढक दिया है। पूरा देश एक अनिश्चय के दौर से गुजर रहा है। हिंदी सिनेमा भी इसी अनिश्चितता के भंवर में फंसा हुआ है। ओटीटी बनाम थिएटर की बहस मंद पड़ गई है। थिएटर में फिल्म देखने के थ्रिल के नॉस्टैल्जिक एहसास के बावजूद ओटीटी अब सर्वमान्य सचाई है। ट्रेड पंडितों के मुताबिक, सीमित बजट की मझोली और छोटी फिल्में निश्चित लाभ के लिए स्ट्रीमिंग प्लैटफॉर्म पर आती रहेंगी। बीच-बीच में लोकप्रिय स्टारों की बड़ी फिल्में भी आ जाएंगी। थिएटर को सिर्फ इवेंट और बिग बजट फिल्मों से ही उम्मीद करनी होगी। ओटीटी और थिएटर का सहअस्तित्व ही फिल्मों को समुचित कारोबार का आधार दे पाएगा। 2022 में स्वतंत्र रूप से ओटीटी के लिए फिल्में तैयार करने की संभावना मजबूत हुई है। महामारी के पहले जो 'मल्टिप्लेक्स सिनेमा' था, वही अब 'ओटीटी सिनेमा' हो गया है।

कारोबार और कामयाबी की चिंताओं से निकलकर फिल्मों की गुणवत्ता पर बात करें तो इस साल हिंदी फिल्मों ने बेहद निराश किया है। ऐसा लगता है कि हिंदी फिल्में स्टारडम के चलन से एक पठार पर पहुंच चुकी हैं। विषय, प्रस्तुति और प्रभाव की विविधता गायब है। लोकप्रिय स्टारों की नए विषयों में रुचि नहीं दिखती। वे पुराने लटके-झटकों में ही दर्शकों को उलझाए रखना चाहते हैं, जबकि दर्शक बार-बार बता रहे हैं कि अगर कंटेंट आकर्षित करेगा तो वे कम लोकप्रिय सितारों की छोटी-मझोली फिल्में भी देखेंगे। आयुष्मान खुराना की 'चंडीगढ़ करे आशिकी' जैसी फिल्में उदाहरण हैं। सलमान खान, अजय देवगन, अक्षय कुमार और जॉन अब्राहम के होने के बावजूद वे 'राधे', 'भुज', 'बेल बॉटम' और 'सत्यमेव जयते 2' नहीं देखेंगे। पिछले 21 महीनों में सभी लोकप्रिय स्टार अपनी चमक खो चुके हैं। आमिर खान की 'लाल सिंह चड्ढा' और आलिया भट्ट की 'गंगूबाई काठियावाड़ी' के अलावा लोकप्रिय स्टार की कोई और उल्लेखनीय फिल्म निकट भविष्य में आती नजर नहीं आ रही है। 2022 पर भी हिंदी फिल्मों में आए ग्रहण का असर दिखेगा। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को उबरने और पटरी पर लौटने में समय लगेगा।

2021 की उल्लेखनीय हिंदी फिल्मों की चर्चा करें तो उनकी संख्या एक दर्जन से अधिक नहीं होगी। 'सरदार उधम', 'मील पत्थर', 'शेरनी', 'रश्मि रॉकेट' 'मिमी', 'संदीप और पिंकी फरार', 'रामप्रसाद की तेरहवीं' और 'पगलेट' अपेक्षाकृत अच्छी फिल्में हैं। इनमें से किसी भी फिल्म में कोई बड़ा स्टार नहीं हैं। इन फिल्मों के निर्देशक ने लीक से हटकर कुछ नया करने की कोशिश की है। ज्यादातर फिल्में ओटीटी पर ही आईं, इसलिए उनके कारोबार के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी उनकी कामयाबी पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता।

इस बीच, दक्षिण भारत की चार भाषाओं ङ्क तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम ङ्क से डब की हुईं या सबटाइटल के साथ रिलीज हुई फिल्मों ने हिंदी दर्शकों को तेजी से रिझाया है। ओटीटी ने उन्हें घर बैठे यह अवसर दिया है, जिसे अंग्रेजी पढ़ने में सक्षम शहरी मध्यवर्गीय दर्शकों ने लपक लिया है। दक्षिण भारत की फिल्मों में कंटेंट की क्वॉलिटी, विषयों की विविधता और प्रस्तुति हिंदी फिल्मों की अपेक्षा प्रभावशाली है। वहां के लोकप्रिय स्टार भी प्रयोगधर्मी और साहसी फिल्मों का हिस्सा बन रहे हैं। समाज के वंचित तबकों के प्रतिनिधियों को इन फिल्मों में नायकत्व मिल रहा है। दक्षिण भारत के लोकप्रिय स्टार अपनी फिल्में हिंदी में डब कर रहे हैं। वे हिंदी दर्शकों के बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा' हिंदी दर्शकों को काफी पसंद आई है।

साउथ ने लुभाया

दिलचस्प है कि हिंदी दर्शक 2021 में दक्षिण भारत से आईं 'जय भीम', 'कर्णन', 'नायट्टू', 'जोजी', 'द ग्रेट इंडियन किचन', 'कला', 'गरुड़ गमन वृषभ वाहन', 'सरपटा परमबराई' आदि फिल्में देख लें तो उन्हें भारतीय सिनेमा का वास्तविक परिदृश्य समझ में आएगा। यह कहना पड़ेगा कि भारतीय सिनेमा की मुख्यधारा अब हिंदी फिल्में नहीं रह गई हैं। साउथ की फिल्में उनकी जगह आ गई हैं।

अंत में यह जिक्र जरूरी है कि वेब सीरीज की प्रचुरता और स्वीकृति ने भी हिंदी दर्शकों को अपनी तरफ खींचा है। 'मिर्जापुर', 'पाताल लोक', 'स्कैम', 'महारानी' और 'गुल्लक' आदि लोकप्रिय वेब सीरीज रही हैं। मनोरंजन उद्योग की इस नई विधा ने सभी निर्माताओं को अपनी तरफ झुकाया है। सभी प्रॉडक्शन कंपनियां किसी न किसी वेब सीरीज का निर्माण कर रही हैं।इतना तय है कि फिल्म, टीवी और वेब सीरीज नए-नए विकल्पों के साथ लोगों का मनोरंजन करते हुए इस कठिन दौर को जहां तक हो सके आसान बनाने का काम जारी रखेंगे।

स्थानीय भाषा में नवाचार कार्यक्रम का आधार

चिंतन वैष्णव, पीवी मधुसूदन राव

दुनिया के अधिकांश हिस्सों की तरह भारत में भी मुख्यधारा के नवाचार इकोसिस्टम में पूरी तरह से भाग लेने के लिए एक नवोन्मेषी को अंग्रेजी में दक्षता की आवश्यकता होती है। एक स्थानीय भाषा का नवोन्मेषी, जो अंग्रेजी नहीं जानता है, संभवत: एक अंग्रेजी बोलने वाले की तुलना में उतनी आसानी से निवेश नहीं जुटा पायेगा, चाहे उसका नवाचार आधारित समाधान कितना भी रचनात्मक हो। ऐसा क्यों हो? क्या रचनात्मक अभिव्यक्ति कामकाज की भाषा पर निर्भर होनी चाहिए? बिल्कुल नहीं! हमने इस सम्बन्ध में कला क्षेत्र में बहुत सारे उदाहरण देखे हैं, जहां कुछ सबसे रचनात्मक कलाकार अंग्रेजी नहीं जानते हैं।

इसलिए यह स्थानीय भाषा में नवाचार कार्यक्रम (वर्नाक्युलर इनोवेशन प्रोग्राम-वीआईपी) तैयार करने का समय है, जो व्यवस्था के तहत रचनात्मक अभिव्यक्ति और भाषा को अलग-अलग करता है। अटल नवाचार मिशन (एआईएम), भारत सरकार का प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका संचालन नीति आयोग करता है। मिशन ऐसे ही एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का शुभारंभ करने वाला है।

2011 की जनगणना के अनुसार, केवल 10.4 प्रतिशत भारतीय अंग्रेजी बोलते हैं और इनमें से अधिकांश के लिए यह दूसरी, तीसरी या चौथी भाषा है। आश्चर्य नहीं कि केवल 0.02 प्रतिशत भारतीय ही अपनी पहली भाषा के रूप में अंग्रेजी बोलते हैं। एक दशक बाद भी इस संख्या में बहुत बदलाव होने की संभावना नहीं है। फिर हमें स्थानीय भाषा के नवोन्मेषकों के लिए समान अवसर क्यों नहीं उपलब्ध कराना चाहिए, जो हमारी 90 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम निश्चित रूप से जानते हैं कि यह समूह भी, चाहे वे कोई भी भारतीय भाषा बोलते हों, कम-से-कम बाकी लोगों के समान ही रचनात्मक प्रतिभा के धनी हैं।

स्थानीय भाषा में नवाचार कार्यक्रम (वर्नाक्युलर इनोवेशन प्रोग्राम-वीआईपी) बनाने का क्या अभिप्राय है? एक स्तर पर, इसका मतलब एक नवाचार इकोसिस्टम तैयार करना है, जहां एक स्थानीय नवोन्मेषक (ए) डिजाइन अवधारणा और उद्यमिता के आधुनिक विषयों

को सीख सकता है, (बी) वैश्विक बाजारों तक पहुंच बना सकता है और (सी) निवेश आकर्षित कर सकता है। यह नवाचार और उद्यमिता से जुड़े जोखिमों को पूरी तरह कम करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह सिर्फ भाषा की बाधा को दूर करने से सम्बंधित है। भारत के सन्दर्भ में इसका मतलब 22 अनुसूचित भाषाओं के लिए अलग-अलग इकोसिस्टम तैयार करना है।स्थानीय नवोन्मेषकों के लिए डिजाइन अवधारणा और उद्यमिता को सुलभ बनाने का पहला कदम इन आधुनिक विषयों को स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराने पर आधारित है। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है- स्थानीय संस्कृतियों से इन्हें जोड़ना। एक भाषा से दूसरी भाषा में विषयों का अनुवाद युगों से होता आ रहा है। किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में हर गुजरते साल के साथ भगवद गीता का अधिक से अधिक अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि सरल अनुवाद का विचार नया नहीं है।अब तक जो नहीं हो पाया है, वह है- इन विषयों को स्थानीय संस्कृतियों के अनुकूल बनाना। इसका सीधा अर्थ यह है कि इस तरह के अनुकूलन के लिए एक योजनाबद्ध तरीका मौजूद नहीं है, जो आवश्यक है। आखिरकार, एक पंजाबी व्यवसायी, एक तमिल व्यवसायी के समान नहीं हैं, भले ही वे दोनों समान व्यावसायिक सिद्धांतों का पालन कर रहे हों। इसी तरह, एक बंगाली उपभोक्ता, गुजराती उपभोक्ता के समान नहीं है। उनकी संस्कृतियों में सूक्ष्म अंतर हैं, जिनके बारे में हम सभी जानते हैं, लेकिन हमें इन अंतरों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है। तो, इसे कैसे किया जाए? आइए हम इस पर एक प्रणाली के रूप में विचार करें।

किसी भी विषय को सीखने के दो प्राथमिक आयाम होते हैं: विषयवस्तु और शिक्षणशास्त्र। उच्चतम स्तर पर, अध्ययन सामग्री के लिए सीखने के सिद्धांत और इसके अनुप्रयोग की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर इस सिद्धांत को सीखता है कि मन और शरीर कैसे कार्य करते हैं और इसे अपनी चिकित्सा पद्धति में लागू करता है। सिद्धांत आगे जाकर अवधारणाओं और उनके अंतर्संबंधों में विभाजित होता है।शिक्षाशास्त्र, अध्ययन सामग्री को सिखाने और सीखने का एक तरीका है। किसी विषय के लिए मोटे तौर पर अध्ययन सामग्री समान होती है और इंटरनेट क्रांति के साथ आज दुनिया भर में कहीं से भी इस सामग्री तक पहुंचा जा सकता है, लेकिन यह अध्यापन-कला ही है, जो एक प्रभावी शिक्षक को दूसरे शिक्षकों से अलग करती है। उच्चतम स्तर पर, शिक्षाशास्त्र के तीन भाग हैं: शिक्षण उद्देश्यों का निर्माण, अध्ययन सामग्री को पढ़ाने और ज्ञान-प्राप्ति के प्रभावी तरीकों का उपयोग करना और यह आकलन करना कि क्या इच्छुक व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने में सफल हो रहे हैं और यदि नहीं, तो अध्यापन-कला को बेहतर रूप में अपनाना। आज संकट यह है कि अध्ययन सामग्री तो आसानी से साझा हो जाती है, लेकिन अध्यापन-कला का तेजी से प्रसार नहीं हो पाता है।

एक स्थानीय भाषा नवाचार कार्यक्रम को दो अतिरिक्त आयामों की आवश्यकता होती है: भाषा और संस्कृति। उपरोक्त चर्चा के आधार पर, किसी विषय को किसी दूसरी भाषा में अपनाने के लिए अवधारणाओं, उनके अंतर्संबंधों और उदाहरणों के अनुवाद की आवश्यकता होती है। जब हम अंग्रेजी से 22 भारतीय भाषाओं में अवधारणाओं और अंतर्संबंधों का अनुवाद करेंगे, तो हम एक ऐसा संग्रह तैयार करेंगे, जो किसी भी द्विभाषी व्यक्ति को अपनी मूल भाषा से दूसरी भाषा में जाने की अनुमति देगा।

ब्लॉग चर्चा

अंकिता शाम्भवी

चीज़ों को बुरी तरह टालने की बीमारी पनप गई है। इन दिनों काम लकड़ियों के गट्ठर की तरह सिर पर चढ़ता जा रहा है। कैसा दौर आ गया है। सब झूठ-मूठ हंसना चाहते हैं, उदासी को स्वीकार करना सबसे कठिन चीज़ है उनके लिए। इस बीच हमने कितना कुछ खो दिया है, किसी ने अपना दोस्त खोया, किसी ने अपने सगे-संबंधी, किसी ने घर गंवा दिया, किसी की नौकरी चली गई। इस विपत्ति के बाद से अचानक सारे नौसिखिए कलाकारों को भी इस भव्य रंगमंच पर भली-भांति नाटक खेलना आ गया है। एक अजीब-सा वाक़िया होता रहा है मेरे साथ। बात कुछ है भी ऐसी, वह यह कि जब भी मैं पेड़-पौधों को सींचते वक्त हल्के-हल्के कुछ गुनगुनाती हूं, वे सब मिलकर झूमने लगते हैं, एक मीठी बयार चलने लगती है ठंडी, उनकी कोंपलें झिलमिलाने लगती हैं—रोशनी से खेलती हुई, फूल, कलियां सब स्पंदित हो उठते हैं, ऐसा हर बार होता है, जैसे ये पौधे सचमुच सुन रहे हों—मेरा गीत। तब सोचती हूं क्या पेड़-पौधे सुन भी सकते हैं? फिर अचानक याद आता है वह प्रयोग, जो मैंने सालों पहले देखा था कभी, उसमें प्रयोगकर्ता दो अलग-अलग गमलों में एक ही नस्ल के पौधे लेते हैं और उन्हें अलग-अलग जगहों पर रख देते हैं, एक-दूसरे से दूर।एक पौधे को रोज़ खरी-खोटी बातें, गालियां, निंदा, अपशब्द वग़ैरह सुनाए जाते हैं, जबकि दूसरे पौधे को पहले वाले से ठीक विपरीत बहुत सुमधुर गीत, वाद्ययंत्र, प्रशंसाएं, प्यारी बातें वग़ैरह सुनाई जाती हैं। अच्छा खाद, पानी और सूरज की भरपूर रोशनी मिलने के बावजूद उन दोनों पौधों पर एक-दूसरे से बिल्कुल अलग असर पड़ता है। जिस पौधे को अपशब्द, गालियां इत्यादि सुनाई गई थीं, वह पौधा सूखकर मर चुका होता है। जबकि दूसरा पौधा जिसे गीत, मीठे बोल वग़ैरह सुनाए गए थे, वह अच्छी तरह विकसित हो गया है, उसमें नए पत्ते आ गए हैं, फूल खिल गए हैं। इस अनूठे प्रयोग को देखने के बाद से मुझे यक़ीन हो चला था कि पौधे सजीव तो होते ही हैं, वे हमारी बातें भी सुनते हैं और भाव, संवेदनाएं आदि भी समझते, महसूस करते हैं।

अतीत से सबक ले चुनौती का मुकाबला

सुरेश सेठ

हमारा देश उत्सवधर्मी देश है। अभी दिवाली से लेकर नववर्ष के आगमन तक उत्सव मनाने के दिन थे। कोरोना के ओमीक्रोन वेरिएंट के बढ़ते खतरे के बावजूद, सेहत संगठनों, प्रशासन एवं प्रधानमंत्री की चिंताभरी चेतावनियों के बावजूद, सभी के आदेश केवल भाषणों, मीडिया एवं विज्ञापन प्रसारणों का शृंगार रहे। दिसंबर के आखिरी दिनों में बर्फबारी देखने का आनंद लेने के लिए पर्यटकों की भारी भीड़ ने शिमला से लेकर उत्तराखंड के पहाड़ी स्थलों का रुख किया। सभी होटल और रुकने के स्थल भर गये। शिमला में तो गाड़ियों की पार्किंग की जगह नहीं रही। अत: कायदे तोड़ कर जहां जगह मिले, वहीं गाड़ी पार्क कर लो, का अलिखित नियम लागू हो गया।

किसान इस बीच दिल्ली मोर्चा विजय कर लौटे अपनी नयी प्राप्त राजनीतिक शक्ति को त्यागने के लिए तैयार नहीं थे। टोल प्लाजा की दरें बढ़ने से लेकर कर्ज माफी और एमएसपी देने की अनिवार्यता तक के मुद्दे पर उनके धरने पंजाब में लग गये। रेल ट्रैक भी निशाना बने। पंजाब से गुजरने वाली हर रेलगाड़ी मुल्तवी हो गयी। परिवहन व्यवस्था चरमरा गयी। रेलें बन्द तो बसों पर यात्रियों का रिकार्ड बोझ बढ़ गया। वैष्णो देवी में अटक गयी भारी भीड़ को इनके द्वारा निकालना एक समस्या बन गयी।

'हम नहीं सुधरेंगे' के अंदाज में अब जबकि नये वर्ष का उत्सव भी इस भीड़ भरे अंदाज में मना लिया गया है। कोरोना

महामारी की तीसरी लहर के आगमन की चिंता भरी खबरें आने लगी हैं। कई महीनों तक देश में टीकाकरण के रिकार्ड तोड़ अभियान के कारण विशेषज्ञ यह कह रहे थे कि भारत में कोरोना की तीसरी लहर का आना स्थगित हो गया है। लेकिन अब कई महीनों के बाद कोरोना के केस बढ़ने लगे और वह भी ओमीक्रोन वेरिएंट के।

एक केस कर्नाटक से शुरू हुआ था। एक पखवाड़े में ही इसने देश के सत्रह राज्यों को अपनी गिरफ्त में ले लिया। एक से बढ़कर केस साढ़े तीन सौ के पार चले गये। यह वृद्धि लगातार जारी है। सरकार 'हर घर टीकाकरण' और 'ट्रेसिंग, टैस्टिंग और टीकाकरण' की त्रिमुखी नीति के साथ इससे निपटने की नीति में नया दम भरना चाहती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि पिछले कुछ महीनों में कोरोना का दबाव कम हो जाने से टीकाकरण की गति धीमी हो गयी थी। यहां तक कि टीकों के भारतीय उत्पादन को जरूरत से अधिक मानकर अिधक जरूरतमंद देशों में निर्यात करने की घोषणा भी हो गयी थी, सिरिंज बनाने वाली फैक्टरियों ने भी उत्पादन कम कर दिया था, ऐसी खबरें मिलीं। अब पुन: इस अभियान के लिए कमर कसनी होगी। घर-घर ट्रेसिंग, टैस्टिंग और टीकाकरण की घोषणा में नये प्राण डालने होंगे।लेकिन क्या टीकाकरण ही इस लौटती महामारी की अंतिम दवा है? चिकित्सा विशेषज्ञ कहते हैं, 'जी नहीं।' ये टीके तो मात्र संक्रमित हो सकने वाले व्यक्तियों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं, रोग के जड़ से उन्मूलक नहीं। इसके लिए इन टीकों को नये आविष्कार और शोध के साथ रोग को जड़ से उखाड़ देने वाला बनाना होगा।कोरोना धूर्त है। पल-पल अपना रूप बदलता है। नये वायरस अपना तांडव दिखाते हैं। इसलिए न केवल ये टीके ऐसे बनें कि इन वायरसों की जड़ से खबर लें। बल्कि यह भी कहा जा रहा है कि अगर अब अपनी दुनिया कोरोना को हमेशा के लिए विदा नहीं कर सकती। फ्लू की तरह हर बरस इसका आगमन होता ही रहेगा। तो फ्लू के उपचार की तरह टीकों में निरंतर शोध चले, सेहत लाभ देने वाले तत्व इनमें शामिल होते रहें। मात्र रोग का मुकाबला करने के लिए रोगी की क्षमता बढ़ाने वाले टीके से काम नहीं चलेगा। अब एक ऐसा टीका बनाया जाये जो कोरोना में पनपने वाले हर वायरस की खबर ले और उसे बृहद स्तर पर पनपने न दे।

लेकिन अभी देश में ओमीक्रोन वेरिएंट वाले जिस कोरोना को त्वरित गति से चलने वाला रोग मान कर हम इसकी रोकथाम कर रहे हैं, इसके उपचार पुराने हैं। पहले तो यह माना जा रहा है कि रोगियों का इलाज पहले डेल्टा या डेल्टा प्लस वेरिएंट वाले में उपचार से हो जायेगा। वही पैरासिटामोल और ताकत बढ़ाने वाले विटामिन।लेकिन रोग के इस नये रूप का मुकाबला करने के लिए नयी उपचार विधि अपनायी जाये। दूसरी लहर में की गयी गलतियां न दोहरायें। केवल घोषणा ही न हो कि इस बार आक्सीजन के सिलेंडरों और वेंटिलेटरों की कोई कमी न होने दी जायेगी, बल्कि यह देख लिया जाये कि क्या इनकी आपूर्ति हो गयी है? इनके इस्तेमाल के लिए निपुण परिचर्या करने वाले यथा स्थान पहुंच गये हैं। अभी तो हालत यह है कि चिकित्सा कर्मी जिन्हें कोरोना से जूझने वाले रणबांकुरों की प्रथम पांत कहा जाता है, वे अपनी अपूर्ण मांगों को लेकर पंजाब और अन्य जगहों पर हड़ताल पर हैं।

आज का राशिफल

मेष : बिगड़े हुए संबंधों में सुधार के लिए अच्छे भावना और निष्ठा पूर्वक संलग्नता की आवश्यकता है। सामाजिकता व पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में व्यस्तता रहेगी।

बृषभ: कुछ असामान्य स्थितियां नकारात्मक चिन्ताओं को उत्पन्न करेंगी। महत्वपूर्ण कायरे में लापरवाही न करें अन्यथा बाद में पश्चताना पड़ सकता है। ध्यान रहें कि कोई भी महत्वपूर्ण संबंध विगड़ने न पायें।

मिथुन : किसी महत्वपूर्ण कार्य के परिणाम के प्रति मन चिन्तित हो सकता है। परिवार में श्रेष्ठ जनों का सम्मान करें। सूझ-बूझ के साथ आप व्यय करें। कार्य क्षेत्र में आपकी महत्ता बढ़ेगी।

कर्क : प्रयासरत् क्षेत्रों में अवरोधों से मन खिन्न होगा, परन्तु संबंधों के लाभ से समस्याओं का समाधान होगा। मजाकिया व हसमुख स्वभाव दूसरों को आकषिर्त करेगा।

सिंह : व्यवसाय में समुचित व्यवस्था के लिए मन प्रयत्नशील होगा। तामसिक एवं खराब प्रवृति के लोगों से दूरी बनाएं। महत्वपूर्ण कायरे के प्रति आलस्य न करें। महत्वपूर्ण कायरे के प्रति लापरवाही न करें।

कन्या : सही समय पर सही निर्णय लेने की चेष्ठा करें। बेकार के कायरे में व्यस्तता से मन खिन्न होगा। कुछ चिन्ताएं मन पर प्रभावी होंगी मन में सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति होगी।

तुला: नई दिशा में आपकी योजना आपको ऊर्जावान बनाएंगी पर लेन-देन में सावधानी बरतें। शिक्षा में लापरवाही न बरतें। महत्वपूर्ण कार्य में आप केन्द्रित हो सकतें हैं। संबंधों में कटु वचनों का प्रयोग न करें।

वृश्चिक: प्रयासरत् क्षेत्र में कोई असफलता मानसिक अवसाद जन्म दे सकती है। रोजगार में परिश्रमानुकूल लाभ मिलेगा। किसी संबंध में प्रगाढ़ता निजी संबंधों में कटुता पैदा कर सकती है।

धनु : कोई मुद्दा विवाद का कारण बन सकता है। अच्छा होगा कि परिजनों के अनुकूल चलने की चेष्ठा करें। दूसरों की आलोचना छोड़ स्वयं का आकलन करें। परिवार में श्रेष्ठ जनों का सम्मान करें।

मकर : जीवन साथी से मधुर वाणी का उपयोग करें। आवेश में कोई कार्य न करें। यात्रा में सावधानी बरतें। नवीन संबंधों में आकषर्ण बढ़ेगा। लक्ष्यहीनता जीवन को अरुचिकर कर रही है अत: इसे बदलें।

कुंभ : कुछ नई कठिनाईयों का बोध हो सकता है। चापलूस तथा धूर्त या खराब प्रवृति के लोगो से दूर रहें। अपने अन्दर धैर्य व साहस बनाए रखे। वर्तमान में कठिनाईयों से कर सामना करने का समय है। **मीन :** संबंधों में कोई मुद्दा कटुता ला सकता है तथा वाणी में संयम रखते हुए हर बात को मधुरता पूर्वक प्रस्तुत करें। थोड़ा अर्थाभव मन को परेशान कर सकता है।